सत्य का सिद्धांत

ज्ञानमीमांसा में ज्ञान की सत्यता एवं असत्यता एक गंभीर समस्या है| ज्ञान की सत्यता के संबंध में यह प्रश्न उठता है कि कब हमारा कोई ज्ञान सत्य कहा जाता है और कब असत्य| बहुधा हम पाते हैं कि जिसे सचमुच ज्ञान जाना जाता है वह असत्य हो जाता है| क्या किसी असत्य ज्ञान को सत्य ज्ञान जानकर उसे सत्य कहा जा सकता है? जिसे हम सचमुच ज्ञान कहते हैं वह कभी असत्य हो नहीं सकता और जो असत्य होता है वह कभी ज्ञान नहीं हो सकता| ज्ञान की सत्यता या असत्यता का प्रश्न दो रूपों में उठता है- 1. सत्यता के स्वरूप के संबंध में, तथा 2. सत्यता की कसौटी के संबंध में|

अर्थात एक प्रश्न यह है कि ज्ञान की सत्यता का क्या स्वरूप है? अथवा किसी ज्ञान को सत्य कहने का अर्थ क्या है? दूसरा प्रश्न यह है कि किसी ज्ञान के सत्य या असत्य की जांच कैसे होती है? सत्य का सिद्धांत में हम इन तमाम समस्याओं का अध्ययन करते हैं| इसके तहत सत्य का स्वरूप तथा किसी ज्ञान की सत्यता या असत्यता की जांच संबंधित कसौटियों या सिद्धांतों का अध्ययन करते हैं|

सत्य का स्वरूप

बहुत से विश्वास एक बार सत्य मान लिए गए, वही बात में असत्य सिद्ध कर दिए गए| वह क्या है, जो एक विश्वास को सत्य बनाता है और दूसरे को असत्य? क्या हम सदैव निश्चित रूप से यह मान सकते हैं कि हमने सत्य की खोज कर ली है? क्या मानव मस्तिष्क किसी वास्तविक ज्ञान की खोज में सक्षम है? कब और किस स्थिति में हमें तर्कसंगत रूप में आश्वासन मिल सकता है कि हमारा संबंध तथ्यों से है ना कि केवल मतों से? सत्य क्या है? सत्य क

का इस्वरूप संबंधित यह मूलभूत प्रश्न है| इस प्रश्न की तलाश सदियों से विचारक करते आ रहे हैं|

समय के साथ मत और विश्वास बदलते गए- दिन प्रतिदिन के सामान्य विश्वास ही नहीं परंतु विज्ञान और दर्शन के भी विश्वास बदलते पाए गए| विज्ञान के वे सिद्धांत जो एक बार सत्य के रूप में स्वीकार किए गए, उनके स्थान पर विपरीत सिद्धांतों को सत्य स्वीकार कर लिए गए| क्या यह विश्वास अपने देश काल पर आधारित अटकल या मत हैं? वस्तुएं अपने में ना तो सत्य हैं और ना ही असत्य| बस वे या तो हैं या नहीं हैं| हमारे निर्णय और तार्किक वाक्य या तो सत्य होते हैं या असत्य होते हैं|

सत्य का संबंध निश्चित कथन से है या वस्तु के विषय में हम जो कुछ कहते हैं, उससे है|

सत्य का स्वरूप ज्ञान की सत्यता की कसौटी पर निर्भर है| कसौटी से सत्य के स्वरूप को निर्धारित किया जा सकता है| सत्य के स्वरूप का निर्धारण जांच के द्वारा भी हो जाता है| सत्य को दो तरह से जांचा जा सकता है- एक तो सत्य चौक तक वाक्यों में व्यक्त किया जाता है और दूसरा सत्य की जांच की कसौटी के आधार पर सत्य का स्वरूप निर्धारित किया जा सकता है|

तर्कवाक्यों में व्यक्त सत्य

जॉन हॉस्पर्स ने सत्य शब्द का अनेकार्थी बताते हुए लिखा है कि सत्य ' सच्चा' के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है और 'वास्तव' के अर्थ में भी| जैसे- यह सच्चा (सत्य) मोती है, इसका अर्थ है, मोती असली है, नकली नहीं है| दूसरा ' वह सच्चा मित्र है' का अर्थ है कि वह वास्तव में एक मित्र है| परंतु सत्य (सच्चा) का यह अर्थ अभीष्ट नहीं है| यहां 'सत्य' तर्क वाक्य में कैसे प्रकट होता है? यह महत्वपूर्ण प्रश्न है| अर्थात सत्य तर्क वाक्य क्या होता है और इसका असत्य तर्क वाक्य से क्या भेद है?

सत्य असत्य को वाक्यों में देखना तर्क वाक्यों का सत्य होगा| यहां यह भी देखना होगा कि सत्य और वस्तुस्थिति का संबंध क्या है| भाषा में वस्तुस्थिति का वर्णन तर्क वाक्यों में होता है| जैसे कोई दुर्घटना, अमुक स्थान, समय में घटी, हमारी बिल्ली काली है, राम के पांच भाई और दो बहने हैं| यह वस्तु स्थितियां हैं| सत्य का संबंध इन से भी होता है| भाषा में इनका वर्णन किया जा सकता है| हॉस्पर्स सत्यता की परिभाषा करते हुए कहते हैं-

" सत्य प्रतिज्ञप्ति (तर्कवाक्य) उस वस्तु स्थिति को बताती है, जिसका अस्तित्व है, अथवा यदि प्रतिज्ञप्ति अतीत के विषय में है तो वह उसे बताती है, जिसका अस्तित्व था, यदि वह भविष्य विषयक है तो वह बताती है, जिसका अस्तित्व होगा|"

इस परिभाषा की व्याख्या करने पर सत्य का स्वरूप स्पष्ट होता है और असत्य से उसका भेद भी स्पष्ट हो जाता है| जैसे यदि ' इस कमरे में पांच कुर्सियां हैं पिक्चर वास्तव में अस्तित्व रखने वाली वस्तुस्थिति को बतलाता है, अतः यह तर्क वाक्य सत्य है| इसके विपरीत असत्य तर्क वाक्य ऐसी वस्तु स्थिति को बताता है, जिसका अस्तित्व ही नहीं है|(अथवा भूतकाल के प्रसंग में नहीं था, या भविष्य में

भी नहीं होगा)| जैसे " मैं आठ फुट लंबा हूं" एक असत्य तर्क वाक्य है, क्योंकि इसका कथन करने पर ऐसी वस्तुस्थिति का अस्तित्व बताना होगा जिसका वस्तुतः अस्तित्व ही नहीं है| सारांश के तौर पर यह कहा जा सकता है कि " सत्य तर्कवाक्य एक ऐसी वस्तुस्थिति को बताता है, जो वास्तविक होती है- अर्थात जो वस्तुतः अस्तित्व रखती है- और मिथ्या तर्कवाक्य ऐसी वस्तुस्थिति को बताता है जिसका वास्तव में अस्तित्व नहीं है(या नहीं था, या नहीं होगा) वह (मिथ्या) ऐसी वस्तुस्थिति को बताता है जो संभव होती है, वास्तविक नहीं| (जैसे ' चंद्रलेखा मध्य रात्रि में कद्दू बन गई' मिथ्या है, परंतु बुद्धिगम्य है| परंतु चौगुनायन दीर्घसूत्रता को पीता है| वास्तविक वस्तुस्थिति को बताता है और ना बुद्धिगम्य है- यह अर्थहीन वाक्य है|

सत्य की जांच की कसौटी अर्थात सत्य के सिद्धांत के आधार पर सत्य के स्वरूप को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है| इसके अंतर्गत संवादिता या अनुरूपता का सिद्धांत, संगतता का सिद्धांत, व्यावहारिकतावादी सिद्धांत सत्य के प्रमुख प्रचलित सिद्धांत हैं|